दृष्टि The Vision

NCERT

THROUGH QUESTIONS

भारतीय इतिहास

कक्षा 6 से 12 तक की पुरानी तथा नई एनसीईआरटी का अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का व्याख्या सहित हल

Think IAS

दृष्टि The Vision

Think Drishti

Quick Book शृंखला की पुस्तकें

NCERT शृंखला की पुस्तकें

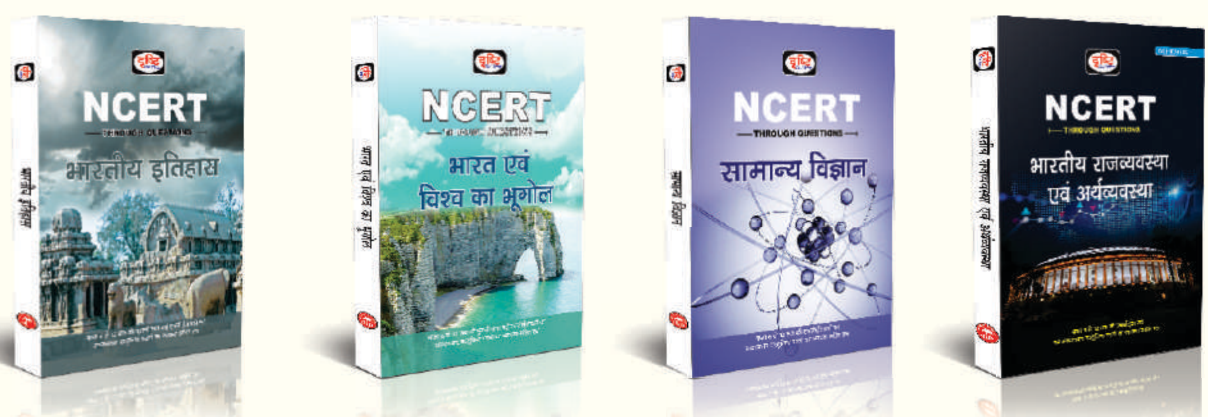

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें 8448485516, 87501-87501, 011-47532596

भारतीय इतिहास

दृष्टि पब्लिकेशन्स

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501

Website:
www.drishtipublications.com, www.drishtiias.com
E-mail :
booksteam@groupdrishti.com

द्वितीय संस्करण- दिसंबर 2019

मूल्य : ₹ 300

प्रकाशक

दृष्टि पब्लिकेशन्स,
(A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.)
641, प्रथम तल,
डॉ. मुखर्जी नगर,
दिल्ली-110009

विधिक घोषणाएँ

- इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक उससे किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।
- हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।
- **© कॉपीराइट :** दृष्टि पब्लिकेशन्स (A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.), सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।
- एम.पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेज़-2, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित।

दो शब्द

प्रिय पाठको,

जैसा कि आपको ज्ञात ही है कि दृष्टि पब्लिकेशन्स की ओर से 'NCERT Series' की तृतीय प्रस्तुति के रूप में 'भारतीय इतिहास' पुस्तक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन मार्च 2018 में किया गया था। इसके पश्चात् पुस्तक की भारी मांग को देखते हुए हमने इसका कई बार पुनर्मुद्रण किया। आप पाठकों द्वारा पुस्तक के प्रति दिखाए गए उत्साह का ही परिणाम है कि हम पुस्तक के द्वितीय एवं परिवर्द्धित संस्करण के साथ आपके समक्ष पुन: उपस्थित हैं। विद्यार्थियों के हितार्थ लिखी गई इस पुस्तक में एन.सी.ई.आर.टी. कक्षा VI से XII तक की नई और पुरानी पुस्तकों का समावेश प्रश्नोत्तर शैली में किया गया है। ऐसा करने का मुख्य ध्येय यह है कि यदि सिविल सेवा सहित अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में इतिहास की एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों को आधार बनाकर प्रश्न पूछे जाएँ तो अभ्यर्थियों को उनके उत्तर देने में कठिनाइयों का सामना न करना पड़े, साथ ही उन्हें इस बात का मलाल भी न रहे कि काश, उन्होंने नई के साथ-साथ पुरानी एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकों का अवलोकन भी कर लिया होता तो वे अमुक प्रश्न का सही उत्तर दे पाते।

अब अभ्यर्थियों के मन में इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक ही है कि आखिर इस पुस्तक में ऐसी कौन-सी विशेषताएँ हैं जो इसे बाज़ार में उपलब्ध अन्य पुस्तकों से विशिष्ट बनाती हैं? पुस्तक को पढ़कर कोई सुधी पाठक ही इसका उत्तर दे सकता है। इस सदर्भ में मेरा तो बस इतना ही कहना है कि सरल भाषा शैली, बोधगम्य संकल्पनाओं तथा तथ्यों की त्रुटिरहित प्रस्तुति इसे अन्य पुस्तकों से पृथक् कर देती है। प्रस्तुत पुस्तक में कक्षा IXवीं, Xवीं एवं XIवीं की एन.सी.ई.आर.टी. इतिहास की नई पुस्तकों को सम्मिलित नहीं किया गया है क्योंकि वे विश्व इतिहास से संबद्ध हैं और सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा तथा अन्य एकदिवसीय परीक्षाओं हेतु अनुपयोगी हैं।

इतिहास की नई और पुरानी एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकों को प्रश्नोत्तर रूप में प्रस्तुत करने का बीड़ा इस विषय में सुदीर्घ अनुभव रखने वाली हमारी 8–10 सदस्यीय टीम ने उठाया। पुस्तक लेखन के दौरान इन सदस्यों ने पाया कि एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों में कहीं-कहीं तथ्यात्मक त्रुटियाँ हैं, साथ ही कई बार तो उन्हें एन.सी.ई.आर.टी. की अलग-अलग पुस्तकों में ही तथ्यात्मक विरोधाभास का सामना करना पड़ा। प्रस्तुत पुस्तक में सभी तरह की तथ्यात्मक त्रुटियाँ सुधार ली गई हैं, साथ-ही-साथ तथ्य संबंधी मतैक्य के अभाव की स्थिति में नोट डालकर विषय-वस्तु का स्पष्टीकरण किया गया है। जैसा कि आप इस सच्चाई से भली-भाँति परिचित हैं कि बाज़ार में उपलब्ध अन्य पुस्तकों में प्रश्नों के विकल्प से संबंधित मात्र दो-तीन तथ्यों का ही उल्लेख कर आसानी से काम निपटा दिया जाता है, किंतु अभ्यर्थियों की इस समस्या का पूर्णत: निवारण करते हुए हमने इस पुस्तक में प्रश्नों के प्रत्येक विकल्प, उससे संबद्ध तथ्यों और अवधारणाओं को महत्त्व देते हुए सही और पूर्ण उत्तर दिये हैं। अभ्यर्थियों के मूल्यवान समय का ध्यान रखते हुए इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि पुस्तक में अनावश्यक और गैर-परीक्षोपयोगी तथ्यों का समावेश न होने पाए और वे लगभग 365 पृष्ठों में प्रकाशित इस पुस्तक को कम-से-कम समय में पढ़कर सफलता की ओर अग्रसर हों। भाषागत अशुद्धियों से बचने के लिये पुस्तक का कई चरणों में अति सूक्ष्म निरीक्षण भी किया गया है। हमें ऐसा विश्वास है कि प्रश्नोत्तर शैली में प्रकाशित इस पुस्तक की व्याख्याओं का यदि एकाग्रता के साथ और पूरे मनोयोग से अध्ययन किया जाए तो न केवल इतिहास संबद्ध आपकी समझ का दायरा विस्तृत होगा, वरन् आप परीक्षा भवन में जटिल अवधारणात्मक प्रश्नों के उत्तर भी अत्यंत सहजतापूर्वक दे सकेंगे।

अब पुस्तक आपके सम्मुख है। अब आप ही तय करेंगे कि यह आपकी अपेक्षाओं पर कितनी खरी उतरी, पर मुझे अगाध विश्वास है कि यह आपकी तैयारी और सफलता में उपयोगी सिद्ध होगी। वैसे तो इस पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने का पूरा प्रयास किया गया है, लेकिन कोई भी कृति शत-प्रतिशत दोषरहित नहीं होती। उसमें कुछ कमियों का रह जाना स्वाभाविक है। अत: मेरा निवेदन है कि आप पुस्तक को पाठक के साथ-साथ आलोचक की नज़र से भी पढ़ें। **अगर आपको इसमें कोई भी कमी दिखे तो अपनी बात बेझिझक '8130392355' नंबर पर वाट्सएप मैसेज से भेज दें।** आपकी टिप्पणियों और सुझावों के आधार पर हम पुस्तक के आगामी संस्करणों को और भी बेहतर बना सकेंगे।

साभार,

प्रधान संपादक

दृष्टि पब्लिकेशन्स

अनुक्रम

कक्षा–VI 1-47

- **हमारे अतीत–I**
1. क्या, कब, कहाँ और कैसे?
2. आरंभिक मानव की खोज में
3. भोजन : संग्रह से उत्पादन तक
4. आरंभिक नगर
5. क्या बताती हैं हमें किताबें और कब्रें
6. राज्य, राजा और एक प्राचीन गणराज्य
7. नए प्रश्न नए विचार
8. अशोक: एक अनोखा सम्राट जिसने युद्ध का त्याग किया
9. खुशहाल गाँव और समृद्ध शहर
10. व्यापारी, राजा और तीर्थयात्री
11. नए साम्राज्य और राज्य
12. इमारतें, चित्र तथा किताबें

पुरानी एन.सी.ई.आर.टी.

- **प्राचीन भारत**
1. आदिम मानव
2. नगर–जीवन का आरंभ
3. वैदिक युग का जीवन
4. भारत : 600 ई.पू. से 400 ई.पू. तक
5. मौर्य साम्राज्य
6. भारत : 200 ई.पू. से 300 ई. तक
7. गुप्तकाल
8. छोटे–छोटे राज्यों का युग
9. भारत और संसार

कक्षा–VII 48-97

- **हमारे अतीत–II**
1. हज़ार वर्षों के दौरान हुए परिवर्तनों की पड़ताल
2. नए राजा और उनके राज्य
3. दिल्ली के सुल्तान
4. मुगल साम्राज्य
5. शासक और इमारतें
6. नगर, व्यापारी और शिल्पीजन
7. जनजातियाँ, खानाबदोश और एक जगह बसे हुए समुदाय
8. ईश्वर से अनुराग
9. क्षेत्रीय संस्कृतियों का निर्माण
10. अठारहवीं शताब्दी में नए राजनीतिक गठन

पुरानी एन.सी.ई.आर.टी.

- **मध्यकालीन भारत**
1. भारत और संसार
2. दक्षिण भारत के राज्य (800 ई. से 1200 ई. तक)
3. उत्तर भारत के राज्य (800 ई. से 1200 ई. तक)
4. दिल्ली के सुल्तान
5. जनता का जीवन
6. मुगलों और यूरोपवासियों का भारत में आगमन
7. अकबर
8. वैभव विलास का युग
9. मुगल साम्राज्य का पतन

कक्षा–VIII 98-156

- **हमारे अतीत–III (भाग-1 + भाग-2)**
1. कैसे, कब और कहाँ
2. व्यापार से साम्राज्य तक कंपनी की सत्ता स्थापित होती है
3. ग्रामीण क्षेत्र पर शासन चलाना
4. आदिवासी, दीकु और एक स्वर्ण युग की कल्पना
5. जब जनता बगावत करती है
6. उपनिवेशवाद और शहर
7. बुनकर, लोहा बनाने वाले और फैक्ट्री मालिक

8. ‘देशी जनता’ को सभ्य बनाना राष्ट्र को शिक्षित करना
9. महिलाएँ, जाति एवं सुधार
10. दृश्य कलाओं की बदलती दुनिया
11. राष्ट्रीय आंदोलन का संघटन : 1870 के दशक से 1947 तक
12. स्वतंत्रता के बाद

पुरानी एन.सी.ई.आर.टी.

◆ **आधुनिक भारत**

1. भारत और आधुनिक दुनिया
2. अठारहवीं सदी का भारत
3. ब्रिटिश शासन का उदय और विस्तार
4. ब्रिटिश शासन का प्रशासनिक ढाँचा, नीतियाँ और उनका प्रभाव (1765–1857 ई.)
5. ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह
6. सन् 1858 के बाद भारत में ब्रिटिश नीतियाँ और प्रशासन
7. आर्थिक जीवन में परिवर्तन (1858–1947 ई.)
8. धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आंदोलन और सांस्कृतिक जागृति
9. भारतीय राष्ट्रवाद का उदय
10. स्वराज के लिये संघर्ष
11. राष्ट्रीय आंदोलन (1923–1939 ई.)
12. स्वतंत्र भारत

कक्षा–XI 157-265

पुरानी एन.सी.ई.आर.टी.

◆ **प्राचीन भारत (रामशरण शर्मा)**

1. प्राचीन भारतीय इतिहास का महत्त्व
2. प्राचीन भारतीय इतिहास के आधुनिक लेखक
3. स्रोतों के प्रकार और इतिहास का निर्माण
4. भौगोलिक ढाँचा
5. प्रस्तर युग : आदिम मानव
6. ताम्रपाषाण कृषक संस्कृतियाँ
7. हड़प्पा संस्कृतिः कांस्य युग सभ्यता
8. आर्यों का आगमन और ऋग्वैदिक युग
9. उत्तर वैदिक अवस्थाः राज्य और वर्ण व्यवस्था की ओर
10. जैन और बौद्ध धर्म
11. जनपद-राज्य और प्रथम मगध साम्राज्य
12. ईरानी और मकदूनियाई आक्रमण
13. बुद्धकाल में राज्य और वर्ण-समाज
14. मौर्य युग
15. मौर्य शासन का महत्त्व
16. मध्य एशिया से संपर्क और उनके परिणाम
17. सातवाहन युग
18. सुदूर दक्षिण में इतिहास का आरंभ
19. मौर्योत्तर युग में शिल्प, व्यापार और नगर
20. गुप्त साम्राज्य का उद्भव और विकास
21. गुप्त काल का जीवन
22. पूर्वी भारत में सभ्यता का प्रसार
23. हर्ष और उसका काल
24. प्रायद्वीप में नए राज्यों के गठन और ग्राम-विस्तार
25. दर्शन का विकास
26. भारत का एशियाई देशों से सांस्कृतिक संपर्क
27. प्राचीन से मध्यकाल की ओर
28. सामाजिक परिवर्तनों का अनुक्रम
29. विज्ञान और सभ्यता की विरासत

◆ **मध्यकालीन भारत (सतीश चन्द्रा)**

1. भारत और बाहरी दुनिया
2. उत्तर भारत : तीन साम्राज्यों का काल (आठवीं से दसवीं सदी तक)
3. चोल साम्राज्य (नवीं से बारहवीं सदी तक)
4. आर्थिक तथा सामाजिक जीवन, शिक्षा और धार्मिक विश्वास (800–1200 ई.)
5. संघर्ष का युग (लगभग 1000–1200 ई.)
6. दिल्ली सल्तनत-I (लगभग 1200–1400 ई.) (मामलूक सुल्तान)
7. दिल्ली सल्तनत-II (लगभग 1200–1400 ई.) (खिलजी और तुगलक)

8. दिल्ली सल्तनत के अधीन शासन और आर्थिक तथा सामाजिक जीवन
9. विजयनगर और बहमनियों का काल तथा पुर्तगालियों का आगमन (1350–1565 ई.)
10. उत्तर भारत में साम्राज्य के लिये संघर्ष-I (लगभग 1400–1525 ई.)
11. भारत में सांस्कृतिक विकास (तेरहवीं से पंद्रहवीं सदी तक)
12. उत्तर भारत में साम्राज्य के लिये संघर्ष-II मुगल और स्थापना (1525–1555 ई.)
13. मुगल साम्राज्य का दृढ़ीकरण (अकबर का काल)
14. दक्कन और दक्षिण भारत (1656 ई. तक)
15. सत्रहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारत
16. मुगलों के अधीन आर्थिक तथा सामाजिक जीवन
17. सांस्कृतिक तथा धार्मिक गतिविधियाँ
18. मुगल साम्राज्य का चरमोत्कर्ष और विघटन-I
19. मुगल साम्राज्य का चरमोत्कर्ष और विघटन-II
20. मूल्यांकन और समीक्षा

कक्षा–XII **266-362**

◆ **भारतीय इतिहास के कुछ विषय [भाग-1]**
1. ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ
2. राजा, किसान और नगर
3. बंधुत्व, जाति तथा वर्ग
4. विचारक, विश्वास और इमारतें

◆ **भारतीय इतिहास के कुछ विषय [भाग-2]**
5. यात्रियों के नज़रिये
6. भक्ति-सूफ़ी परंपराएँ
7. एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर
8. किसान, ज़मींदार और राज्य
9. शासक और इतिवृत्त : मुगल दरबार

◆ **भारतीय इतिहास के कुछ विषय [भाग-3]**
10. उपनिवेशवाद और देहात
11. विद्रोही और राज
12. औपनिवेशिक शहर
13. महात्मा गांधी और राष्ट्रीय आंदोलन
14. विभाजन को समझना
15. संविधान का निर्माण

पुरानी एन.सी.ई.आर.टी.

◆ **आधुनिक भारत (विपिन चन्द्रा)**
1. अठारहवीं सदी का भारत
2. भारत में यूरोपीयों का प्रवेश और अंग्रेज़ों की विजय
3. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की आर्थिक नीतियाँ और प्रशासनिक ढाँचा (1757–1857)
4. प्रशासनिक संगठन और सामाजिक तथा सांस्कृतिक नीति
5. उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण
6. 1857 का विद्रोह
7. 1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन
8. ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव
9. नए भारत का उदय-राष्ट्रवादी आंदोलन (1858–1905)
10. नए भारत का उदय-1858 के बाद धार्मिक और सामाजिक सुधार
11. राष्ट्रवादी आंदोलन (1905–1918)–उग्र राष्ट्रवाद का विकास
12. स्वराज के लिये संघर्ष-I (1919–1927)
13. स्वराज के लिये संघर्ष-II (1927–1947)

नोट: पुस्तक को पूर्ण रूप से परीक्षोपयोगी बनाने के लिये एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा IX, X (नई-पुरानी दोनों) तथा कक्षा XI (नई) की पुस्तकों को शामिल नहीं किया गया है, क्योंकि ये पुस्तकें विश्व इतिहास खंड से संबंधित हैं जो सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये अनुपयोगी हैं।

कक्षा VI

हमारे अतीत-I

1. क्या, कब, कहाँ और कैसे?

1. गेहूँ और जौ की फसलों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
   1. मनुष्यों द्वारा सर्वप्रथम इन्हीं फसलों को उपजाने की शुरुआत की गई।
   2. इन फसलों के उपजाने का क्षेत्र हिमालय और विंध्य की पहाड़ियाँ थीं।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (a)
व्याख्या: सर्वप्रथम मनुष्य ने गेहूँ और जौ उपजाना आरंभ (लगभग 8000 वर्ष पूर्व) किया।
- इन फसलों को उपजाने का कार्य सुलेमान और किरथर पहाड़ी क्षेत्रों में हुआ न कि विंध्य क्षेत्रों में। अत: कथन 2 गलत है।
- गेहूँ और जौ उपजाने के प्राचीनतम साक्ष्य मेहरगढ़ (बलूचिस्तान) से प्राप्त होते हैं।
- नवीनतम तथ्यों के अनुसार, चावल उपजाने के प्राचीनतम साक्ष्य सन्त कबीरनगर के लहुरादेव में पाए गए हैं। ये साक्ष्य लगभग 9000 से 8000 वर्ष पूर्व के हैं।
- गारो तथा मध्य भारत के विंध्य पहाड़ी क्षेत्र अन्य कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ कृषि का विकास हुआ।

2. भारतीय उपमहाद्वीप के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
   1. आरम्भिक नगरों का विकास सिन्धु व इसकी सहायक नदियों के किनारे हुआ।
   2. गंगा व इसकी सहायक नदियों के किनारे नगरों का विकास लगभग 5000 वर्ष पूर्व हुआ।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (c) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (a)
व्याख्या: कथन 1 सही है। लगभग 4700 वर्ष पूर्व सिन्धु व उसकी सहायक नदियों के किनारे आरम्भिक नगरों का विकास हुआ। इन्हीं नगरों में विकसित सभ्यता सिन्धु सभ्यता के नाम से जानी गई।
- गंगा व इसकी सहायक नदियों के किनारे नगरों का विकास लगभग 2500 वर्ष पूर्व हुआ यानी सिन्धु नदी के किनारे सभ्यताएँ पहले विकसित हुईं। अत: कथन 2 गलत है।

3. गंगा नदी के दक्षिण में इसकी सहायक नदी सोन के आस-पास का क्षेत्र प्राचीन काल में किस नाम से जाना जाता था?

   (a) अवन्ति (b) वज्जि
   (c) काशी (d) मगध

उत्तर: (d)
व्याख्या: सोन नदी के आस-पास का क्षेत्र प्राचीन काल में मगध कहलाता था।
- मगध प्राचीन काल का पहला बड़ा राज्य था। इसके शासक बहुत शक्तिशाली थे, उन्होंने एक विशाल राज्य स्थापित किया था।
- मगध साम्राज्य का उत्कर्ष ई.पू. छठवीं शताब्दी में हुआ था। मगध साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक (लगभग 544-492 ई.पू.) बिम्बिसार था।

4. भारत देश के नाम के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   1. लगभग 2500 वर्ष पूर्व उत्तर-पश्चिम की ओर से आने वाले ईरानियों और यूनानियों ने सिन्धु को हिंदोस अथवा इंदोस तथा इस नदी के पूर्व में स्थित भूमि प्रदेश को 'इंडिया' कहा।
   2. 'भरत' नाम का प्रयोग उत्तर-पश्चिम में रहने वाले लोगों के एक समूह के लिये किया जाता था। इस समूह का उल्लेख संस्कृत भाषा की आरंभिक कृति 'ऋग्वेद' में भी मिलता है।

   नीचे दिये गए कूट का प्रयोग करके सही उत्तर चुनिये-

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)
व्याख्या: उपर्युक्त दोनों कथन सही हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर से आने वाले ईरानियों और यूनानियों ने सिन्धु को हिंदोस अथवा इंदोस कहा। उन्होंने इस नदी के पूर्व में स्थित भूमि प्रदेश को 'इंडिया' कहा।
- 'भरत' नाम का प्रयोग उत्तर-पश्चिम में रहने वाले लोगों के एक समूह के लिये किया जाता था। इस समूह का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद संस्कृत की आरम्भिक कृति है जो लगभग 3500 वर्ष पुरानी है। बाद में इसी भरत समूह के नाम का प्रयोग देश के लिये होने लगा।

5. पाण्डुलिपियों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

   (a) अतीत में हाथ से लिखी गई पुस्तकें पाण्डुलिपि कहलाती थीं।
   (b) अंग्रेज़ी में पाण्डुलिपि के लिये मैन्यूस्क्रिप्ट शब्द का प्रयोग होता है जो लैटिन भाषा के शब्द 'मेनू', (जिसका अर्थ 'हाथ' है) से निकला है।

उत्तरः (b)

व्याख्याः कथन 1 और 3 सही हैं परंतु 2 गलत है क्योंकि गिनती की यह पद्धति अरबों द्वारा अपनाई गई और तब यूरोप में भी फैल गई। अन्य अंकों का प्रयोग पहले से होता था।

8. सूची–I को सूची–II सुमेलित कीजिये तथा नीचे दिये गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिये–

सूची-I (काव्य)	**सूची-II (रचनाकार)**
A. शिलप्पादिकारम्	1. वाल्मीकि
B. मणिमेखलई	2. सीतलै सत्तनार
C. मेघदूतम्	3. कालिदास
D. रामायण	4. इलांगो

कूटः

	A	B	C	D
(a)	2	4	3	1
(b)	4	3	1	2
(c)	4	2	3	1
(d)	2	1	3	4

उत्तरः (c)

व्याख्याः शिलप्पादिकारम् एक प्रसिद्ध तमिल महाकाव्य है जिसकी रचना इलांगो द्वारा (लगभग 1800 वर्ष पूर्व) की गई थी। इसमें कोवलन नामक व्यापारी की कहानी है जो पुहार में रहता था।

- मणिमेखलई नामक महाकाव्य तमिल के एक व्यापारी सीतलै सत्तनार द्वारा (लगभग 1400 वर्ष पूर्व) लिखा गया था। इसमें कोवलन तथा माधवी की बेटी की कहानी है।
- प्रसिद्ध गीतकाव्य मेघदूतम् कालिदास द्वारा रचित है। इसमें एक विरही प्रेमी बरसात के बादल को अपना संदेशवाहक बनाने की कल्पना करता है। कालिदास अपनी रचनाएँ संस्कृत में लिखते थे।
- प्रसिद्ध संस्कृत महाकाव्य 'रामायण' के रचनाकार वाल्मीकि हैं। इसमें कोशल के राजकुमार राम की कथा वर्णित है।

9. कागज का आविष्कार निम्नलिखित में से कहाँ हुआ था?

(a) भारत

(b) चीन

(c) अरब

(d) यूरोप

उत्तरः (b)

व्याख्याः कागज का अविष्कार लगभग 1900 वर्ष पूर्व चीन में लून नाम के व्यक्ति ने किया।

- लगभग 1400 वर्ष पूर्व यह तकनीक कोरिया तक पहुँची। इसके तुरंत बाद ही जापान तक फैल गई। लगभग 1800 वर्ष पूर्व यह बगदाद में पहुँची, फिर बगदाद से यह यूरोप, अफ्रीका और एशिया के अन्य भागों में फैली। इस उपमहाद्वीप में कागज की जानकारी बगदाद से ही आई।

जुड़िये हमारे यू-ट्यूब चैनल Drishti IAS से

आपकी तैयारी को और अधिक धारधार बनाने के लिये दृष्टि आई.ए.एस. ने YouTube चैनल की शुरुआत की है जिसके अंतर्गत IAS की तैयारी से जुड़े कई तरह के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं

- ऑडियो आर्टिकल
- टू द पॉइंट
- टॉपर्स व्यू
- Strategy
- Concept Talk & many more...

Visit us : YouTube / DrishtiIAS & SUBSCRIBE

For any query please contact:
8130392354, 56, 87501-87501, 011-47532596

प्राचीन भारत

1. आदिम मानव

1. खानाबदोश मनुष्य के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-
   1. आरंभ में लोग खानाबदोश थे।
   2. वे लोग अकेले रहने के बजाय समूह बनाकर रहते थे।
   3. आमतौर पर एक समूह में कुछ पुरुष, स्त्रियाँ तथा बच्चे होते थे।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) केवल 1 और 2 (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (d)
व्याख्या: उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं। आरंभ में लोग खानाबदोश थे, यानि वे भोजन और आश्रय की तलाश में झुंड बनाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे। सुरक्षा की दृष्टि से, अकेले रहने की बजाय समूह बनाकर रहना बेहतर था। उन दिनों का जीवन सचमुच ही बड़ा कठिन था, क्योंकि लोग पेड़ों के फल-फूल, जंगली पौधे खाते थे और जो जानवर मिल जाते उनका शिकार करते थे। इसी कारण जब वे एक स्थान पर पाए जाने वाले अधिकांश पशुओं का शिकार कर लेते तो शिकार की खोज में उन्हें दूसरे स्थान पर जाना पड़ता था।

2. **कथन (A) :** आदिम मानव के जीवन में आग एक अजूबा थी।
   कारण (R) : आग के इस्तेमाल से रहन-सहन में बड़ा सुधार हुआ।
   नीचे दिये गए कूट का प्रयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिये।
   (a) (A) तथा (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) का सही स्पष्टीकरण है।
   (b) (A) तथा (R) दोनों सही हैं परंतु (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
   (c) (A) सही है, परंतु (R) गलत है।
   (d) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।

उत्तर: (b)
व्याख्या: आग की खोज संयोग से हुई थी। पत्थर के दो टुकड़ों को आपस में टकराने से एक चिनगारी उठी, और जब वह सूखी पत्तियों और टहनियों पर गिरी तो उनमें से आग निकली। आग आदिम मानव के लिये एक अजूबा थी परंतु आगे जाकर इसका अनेक कामों में इस्तेमाल किया गया और इससे रहन-सहन में बड़ा सुधार हुआ। आग की खोज को हम एक महान खोज कह सकते हैं।

3. आदिम मानव के द्वारा इस्तेमाल किये गए औजार एवं हथियार एवं इस प्रकार की कुछ अन्य चीजें उप-महाद्वीप के विविध भागों की नदियों में मिली हैं। ऐसे प्राप्त साक्ष्यों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
   1. कश्मीर घाटी में जानवरों की हड्डियों से भी औजार और हथियार बनाए जाते थे।
   2. पत्थर के बड़े टुकड़ों से हथौड़े, कुल्हाड़ियाँ और बसूले बनाए जाते थे।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)
व्याख्या: उपर्युक्त दोनों कथन सत्य हैं। पत्थर के बड़े टुकड़ों से, जो आदमी की मुट्ठी में आ सकते हैं, हथौड़े, कुल्हाड़ियाँ और बसूले बनाए जाते थे। प्रारंभ में बिना मूठ की कुल्हाड़ियों से ही पेड़ आदि की टहनियाँ काटी जाती थीं। बाद में उसे डंडे से बांध दिया गया, तो उसकी शक्ति बढ़ गई और उसका बेहतर उपयोग होने लगा। औजारों के उपयोग से आदमी को बड़ा लाभ हुआ। इनसे वह पेड़ों की टहनियाँ काटने, जानवर मारने, जमीन खोदने और लकड़ी तथा पत्थर को शक्ल देने में समर्थ हुआ। (नोट: इस समय औजारों एवं हथियारों को पुरातत्ववेत्ता 'अश्मोपकरण' कहते हैं।)

4. पाषाण युग एवं ताम्रयुग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. पाषाण युग में मनुष्य केवल पत्थर के औजारों का इस्तेमाल करता था।
   2. ताम्रयुग में मनुष्य ने पत्थरों के औजारों के साथ धातु के औजारों का इस्तेमाल शुरू कर दिया।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)
व्याख्या: उपर्युक्त दोनों कथन सत्य हैं। जिस युग में मनुष्य केवल पत्थर के औजारों का इस्तेमाल करता था उसे पाषाण युग (पुरापाषाण युग तथा नवपाषाण युग) कहते हैं। जिस युग में मनुष्य ने छोटे-छोटे पत्थरों के औजारों के साथ-साथ धातु के औज़ारों का इस्तेमाल शुरू कर दिया उसे ताम्रयुग या कांस्ययुग (ताम्र पाषाण युग) कहते हैं। भारत के कई स्थानों से उस युग की तांबे या काँसे की कुल्हाड़ियाँ और छुरियाँ मिली हैं। ऐसे कुछ स्थान हैं- ब्रह्मगिरि (मैसूर के पास) और नवदा टोली (नर्मदा तट पर)।

5. मनुष्य के द्वारा खोजी गई सर्वप्रथम धातु कौन-सी थी?

   (a) तांबा (b) लोहा
   (c) सीसा (d) जस्ता

उत्तर: (a)
व्याख्या: मनुष्य के द्वारा खोजी गई सर्वप्रथम धातु तांबा थी। बाद में तांबे के साथ दूसरी धातुएँ मिलाई गईं; जैसे राँगा, जस्ता तथा सीसा। इन्हें मिलाने से जो मिश्रधातु बनी वह काँसा कहलाई।

हमारे अतीत-II

1. हज़ार वर्षों के दौरान हुए परिवर्तनों की पड़ताल

1. मध्यकाल में 'विदेशी' शब्द प्रयुक्त होता था–
   1. गाँव में आने वाला कोई भी व्यक्ति जो अनजान हो।
   2. एक ही गाँव में अलग-अलग धर्म के लोग एक दूसरे के लिये यह शब्द प्रयुक्त करते थे।

   उपर्युक्त में से कौन सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (a)
व्याख्या: मध्यकाल में किसी गाँव में आने वाला कोई भी अनजान व्यक्ति जो उस समाज या संस्कृति का अंग न हो 'विदेशी' कहलाता था। ऐसे व्यक्ति को हिन्दी में परदेशी एवं फारसी में अजनबी कहा जा सकता है किंतु एक ही गाँव के रहने वाले दो किसान अलग-अलग धर्म या जाति से जुड़े होने पर भी एक-दूसरे के लिये विदेशी नहीं थे।

2. मध्यकाल में समाज के अंदर एक नए वर्ग का विकास हुआ 'राजपूत'। निम्नलिखित में से कौन-कौन से समूह (वर्ग) इसमें शामिल थे?
   1. सामंत 2. सेनापति
   3. सैनिक

   कूट:

   (a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
   (c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (d)
व्याख्या: मध्यकाल में जिन समुदायों का महत्त्व बढ़ा उनमें 'राजपूत' प्रमुख थे। जो कि 'राजपूत'(अर्थात् राजा का पुत्र) से निकला है। 8वीं से 14वीं सदी के बीच यह नाम आमतौर पर योद्धाओं के उस समूह के लिये प्रयुक्त होता था जो क्षत्रिय वर्ण होने का दावा करते थे। 'राजपूत' शब्द के अंतर्गत केवल राजा और सामंत वर्ग ही नहीं बल्कि सेनापति और सैनिक भी आते थे जो पूरे उपमहाद्वीप में अलग-अलग शासकों की सेनाओं में सेवारत थे।

3. मध्यकाल में 'रहट' का प्रयोग किस कार्य के लिये किया जाता था?

   (a) सिंचाई के लिये
   (b) सूत की कताई के लिये
   (c) बारूद वाले हथियार बनाने के लिये
   (d) मिट्टी का सामान बनाने के लिये

उत्तर: (a)
व्याख्या: मध्यकाल में 'रहट' का प्रयोग सिंचाई के लिये किया जाता था।

4. निम्न कथनों पर विचार कीजिये–
   1. मिन्हाज-ए-सिराज ने जब पहली बार हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग किया तो उसका आशय अविभाजित भारत में स्थित क्षेत्रों से था।
   2. बाबर ने हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग इस उपमहाद्वीप के भूगोल, पशु-पक्षियों और यहाँ के निवासियों की संस्कृति का वर्णन करने के लिये किया।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (b)
व्याख्या: 13वीं सदी में जब फारसी इतिहासकार मिन्हाज-ए-सिराज ने हिन्दुस्तान शब्द का प्रयोग किया था तो उसका आशय पंजाब, हरियाणा और गंगा-यमुना के बीच स्थित इलाकों से था, उसने इस शब्द का राजनीतिक अर्थ में उन इलाकों के लिये इस्तेमाल किया था जो दिल्ली सल्तनत के अधिकार क्षेत्र में आते थे।

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
   1. 'नस्तलिक लिपि' दायीं से बायीं ओर लिखी जाती थी जबकि 'शिकस्त लिपि' बायीं से दायीं ओर।
   2. फारसी, अरबी के जानकारों के लिये नस्तलिक लिपि को पढ़ना आसान नहीं था।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) ना तो 1 और नही 2

उत्तर: (a)
व्याख्या: नस्तलिक लिपि (बायीं ओर) में वर्ण जोड़कर धारा प्रवाह रूप से लिखे जाते हैं। फारसी, अरबी के जानकारों के लिये इस लिपि को पढ़ना आसान होता है। शिकस्त लिपि (दायीं ओर) अधिक संक्षिप्त, सघन और कठिन है।

2. नए राजा और उनके राज्य

1. दक्कन के 'राष्ट्रकूट' किनके सामंत थे?

   (a) कर्नाटक के चालुक्यों के
   (b) चोलों के
   (c) केरल के चेर शासकों के
   (d) वेंगी के चालुक्यों के

उत्तर: (a)
व्याख्या: दक्कन के 'राष्ट्रकूट' कर्नाटक के चालुक्यों के सामंत थे। आठवीं सदी के मध्य में एक राष्ट्रकूट प्रधान दंतीदुर्ग ने अपने चालुक्य स्वामी की अधीनता से इंकार कर दिया, उसे हराया और हिरण्यगर्भ नामक एक अनुष्ठान किया।

मध्यकालीन भारत

1. भारत और संसार

1. मध्यकाल से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये।
   1. भारत में बोली जाने वाली वर्तमान काल की सभी भाषाओं का विकास मध्य काल में हुआ।
   2. मध्यकालीन साहित्य आरंभ में ताड़ पत्रों और भोज पत्रों पर लिखे गए, पर तेरहवीं सदी से ये कागज पर लिखे जाने लगे।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)
व्याख्या: उपर्युक्त दोनों कथन सत्य हैं। भारत में बोली जाने वाली वर्तमान काल की सभी भाषाओं का विकास मध्यकाल में हुआ। आज प्रयोग में आने वाले खाद्य पदार्थ एवं वस्त्र इसी काल में लोकप्रिय हुए। मध्यकाल के इतिहास को जानने के लिये विभिन्न प्रकार के साहित्यिक साधन प्राप्त हैं। यह साहित्य आरंभ में ताड़ पत्रों और भोज पत्रों पर लिखा गया था, पर तेरहवीं शताब्दी से कागज पर लिखा जाने लगा। इन पुस्तकों में से अनेक अब तक मौजूद हैं।

2. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
   1. पहले चार खलीफाओं के बाद उमैय्यदों का शासन आया तथा इसके पश्चात बगदाद के अब्बासी खलीफाओं ने शासन किया।
   2. हारून-उल-रशीद उमैय्यद खलीफाओं में से थे।
   3. उमैय्यदों ने दमिश्क से शासन किया।

   कूट:

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) केवल 1 और 3 (d) उपर्युक्त सभी।

उत्तर: (c)
व्याख्या: कथन 1 तथा 3 सही है। पहले चार खलीफा हज़रत मुहम्मद के साथी थे। उनके बाद उमैय्यदों का शासनकाल आया। ये दमिश्क से शासन करते थे। उमैय्यदों के बाद अब्बासी वंश के शासकों ने बगदाद से शासन किया। हारून-उल-रशीद जिनका दरबार सारे संसार में प्रसिद्ध था, बगदाद के खलीफा थे। अतः कथन 2 असत्य है।

3. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   1. नवीं शताब्दी में अब्बासी खलीफाओं की शक्ति में वृद्धि हुई।
   2. पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के यूरोप में विद्या का विकास करने में अरब-निवासियों के ज्ञान का महत्त्वपूर्ण हाथ है।

   कूट:

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (b)
व्याख्या: कथन 1 गलत है क्योंकि नवीं शताब्दी में अब्बासी खलीफाओं की शक्ति घट गयी। उनका राज्य क्षेत्र जो प्रांतों में विभाजित था, उनके नियंत्रण में न रहा और सभी प्रांत स्वतंत्र हो गए (उन प्रांतों में गजनी और गौर के प्रांत भी थे)। जबकि कथन 2 सही है।

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
   1. बारूद, कागज और कंपास (कुतुबनुमा) बनाने की तथा छापने की कला आदि सब चीन से यूरोप पहुँचे।
   2. मंगोलों ने इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया अतः उन्होंने चीन के कुछ भागों और मध्य एशिया में रहने वाली जातियों को इस्लाम धर्म को मानने वाला बना दिया।
   3. चीन के व्यापारी केवल रेशम मार्ग का प्रयोग करते थे।

   कूट:

   (a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
   (c) केवल 2 और 3 (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (b)
व्याख्या: कथन 1 और 2 सत्य हैं किंतु कथन 3 असत्य है। क्योंकि चीन के व्यापार में केवल रेशम मार्ग का ही प्रयोग नहीं किया जाता था बल्कि चीन के व्यापारी, जहाजों से भी अपना सामान ले जाते थे।

2. दक्षिण भारत के राज्य (800 ई. से 1200 ई. तक)

1. प्राचीन काल की अपेक्षा मध्यकाल में भारत के उत्तरी एवं दक्षिणी अर्द्धभागों के मध्य अधिक निकटता के संबंध के कारण थे-
   1. दक्षिण भारत के उत्तरी राज्यों ने अपने राज्य गंगा घाटी तक स्थापित करने के लिये प्रयास किये।
   2. दक्षिण भारत के धार्मिक आंदोलनों ने उत्तर भारत को भी प्रभावित किया।
   3. दक्षिण भारत के बहुत से ब्राह्मण उत्तर भारत में आकर बस गए।

   नीचे दिये-गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)
व्याख्या: कथन (1) और (2) सही है। मध्यकाल में इस विशाल देश के उत्तर एवं दक्षिण राज्य एक-दूसरे से उस प्रकार अलग नहीं रहे जिस प्रकार वे प्राचीन काल में थे। इस समय विन्ध्य पर्वत शृंखला और दक्कन उत्तर भारत और दक्षिण भारत के बीच संबंध स्थापित करने का साधन बन गए। मध्य काल में इन राज्यों की निकटता के तीन प्रमुख कारण थे। पहला यह कि दक्षिण भारत के उत्तरी राज्यों ने अपने राज्य अधिकार को गंगा नदी की घाटी तक फैलाने का प्रयत्न किया। दूसरा दक्षिण भारत के धार्मिक आंदोलन उत्तर भारत में भी लोकप्रिय और तीसरा यह कि उत्तर भारत के बहुत से ब्राह्मण दक्षिण भारत में जाकर बस गए जिससे मेल-जोल की भावना में वृद्धि हुई। कथन (3) गलत है।

कक्षा VIII

हमारे अतीत–III (भाग-1 + भाग-2)

1. कैसे, कब और कहाँ

1. ब्रिटिश काल के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. हिन्दुस्तान के नक्शे तैयार करने का कार्य रॉबर्ट क्लाइव ने जेम्स रेनेल को दिया था।
   2. रॉबर्ट क्लाइव भारत का प्रथम गवर्नर जनरल था।
   3. भारत का अंतिम गवर्नर जनरल लॉर्ड माउंटबेटन था।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 2
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (c)
व्याख्या: कथन 1 सही है, क्योंकि रॉबर्ट क्लाइव ने जेम्स रेनेल को हिन्दुस्तान के नक्शे तैयार करने का काम सौंपा था। भारत पर अंग्रेज़ों की विजय के समर्थक रेनेल को वर्चस्व स्थापित करने की प्रक्रिया में नक्शे तैयार करना महत्त्वपूर्ण लगता था।
- वारेन हेस्टिंग्स 1773 में गवर्नर जनरल बना था जो कि भारत का पहला गवर्नर जनरल था। रॉबर्ट क्लाइव बंगाल का गवर्नर था। अत: कथन 2 गलत है।
- भारत का अंतिम गवर्नर जनरल लॉर्ड माउंटबेटन था। अत: कथन 3 सही है।

2. 'ए हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया' नामक पुस्तक निम्नलिखित में से किसके द्वारा लिखी गई?
   (a) जेम्स मिल
   (b) जेम्स रेनेल
   (c) वारेन हेस्टिंग्स
   (d) इनमें से किसी के द्वारा नहीं।

उत्तर: (a)
व्याख्या: 1817 में स्कॉटलैंड के अर्थशास्त्री और राजनीतिक दार्शनिक जेम्स मिल ने तीन विशाल खंडों में 'ए हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया' नामक पुस्तक लिखी।
- इस किताब में उन्होंने भारत के इतिहास को हिंदू, मुस्लिम और ब्रिटिश, इन तीन काल खंडों में बाँटा था।
- मिल को लगता था कि सभी एशियाई समाज सभ्यता के मामले में यूरोप से पीछे हैं और ब्रिटिश शासन भारत को सभ्यता की राह पर ले जा सकता था। मिल ने तो यहाँ तक सुझाव दिया था कि अंग्रेज़ों को भारत के सारे भू-भाग पर कब्ज़ा कर लेना चाहिये ताकि भारतीय जनता को ज्ञान और सुखी जीवन प्रदान किया जा सके। वह मानता था कि अंग्रेज़ों की मदद के बिना हिन्दुस्तान प्रगति नहीं कर सकता।

3. अंग्रेज़ों द्वारा सरकारी रिकॉर्ड को संभालकर रखने के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. अंग्रेज़ों द्वारा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ों को बचाकर रखने के लिये अभिलेखागार (आर्काइव) और संग्रहालय जैसे संस्थान बनाए गए।
   2. प्रत्येक सरकारी विभाग की कार्यवाहियों के दस्तावेज़ों की सावधानीपूर्वक नकलें बनाई जाती थीं, जिन्हें खुशनवीसी के माहिर लिखते थे।
   3. अंग्रेज़ी शासन द्वारा तैयार किए गए सरकारी रिकॉर्ड इतिहासकारों का एक महत्त्वपूर्ण साधन होते हैं।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 3
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (d)
व्याख्या: अंग्रेज़ों को लगता था कि तमाम अहम दस्तावेज़ों और पत्रों को संभालकर रखना ज़रूरी है, लिहाजा उन्होंने महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ों को बचाकर रखने के लिये अभिलेखागार और संग्रहालय जैसे संस्थान बनाए। उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में प्रशासन की एक शाखा से दूसरी शाखा के पास भेजे गए पत्रों और ज्ञापनों को आप आज भी अभिलेखागारों में देख सकते हैं। उन्नीसवीं सदी के शुरुआती सालों में इन दस्तावेज़ों की सावधानीपूर्वक नकलें बनाई जाती थीं। उन्हें खुशनवीसी के माहिर लिखिते थे। अत: कथन 1 और 2 सही हैं।
- खुशनवीसी या सुलेखनवीस ऐसे लोग होते हैं जो बहुत सुंदर ढंग से चीज़ें लिखते हैं।
- कथन 3 भी सही है क्योंकि अंग्रेज़ी शासन द्वारा तैयार किए गए सरकारी रिकॉर्ड इतिहासकारों का एक महत्त्वपूर्ण साधन होते हैं। अंग्रेज़ों को मान्यता थी की चीज़ों को लिखना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

2. व्यापार से साम्राज्य तक कंपनी की सत्ता स्थापित होती है

1. भारत में यूरोपीय व्यापारिक शक्तियों के आगमन का सही क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
   (a) डच → फ्राँसीसी → पुर्तगाली → अंग्रेज़
   (b) पुर्तगाली → अंग्रेज़ → फ्राँसीसी → डच
   (c) अंग्रेज़ → पुर्तगाली → डच → फ्राँसीसी
   (d) पुर्तगाली → डच → अंग्रेज़ → फ्राँसीसी

उत्तर: (d)
व्याख्या: भारत में यूरोपीय व्यापारिक शक्तियों के आगमन का सही क्रम इस प्रकार है- पुर्तगाली → डच → अंग्रेज़ → डेन → फ्राँसीसी।

आधुनिक भारत

1. भारत और आधुनिक दुनिया

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. नवजागरण ने यूरोप के अनेक व्यक्तियों को स्वतंत्र-चिंतन के लिये और चिरस्थापित सिद्धांतों तथा प्रथाओं के बारे में प्रश्न उठाने के लिये प्रेरित किया।
   2. देहाती क्षेत्र की अपेक्षा शहरों में ज़्यादा खुला वातावरण था इसलिये शहरों में तरह-तरह के नए विचारों और कला का खूब विकास हुआ।
   3. समाज और सरकार में व्यापारियों को उच्च पद प्राप्त हुए जिससे सरदारों और आम लोगों के बीच एक नए वर्ग-मध्यवर्ग का उदय हुआ।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 3
   (c) केवल 2 और 3
   (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (d)
व्याख्या: नवजागरण ने यूरोप के अनेक व्यक्तियों को स्वतंत्र-चिंतन के लिये और चिरस्थापित सिद्धांतो तथा प्रथाओं के बारे में निस्संकोच प्रश्न उठाने के लिये प्रेरित किया। फलत: वैज्ञानिक पद्धति का प्रसार हुआ। जिसका जन्म मध्य युग के अंतिम दौर में इटली के कुछ नगरों में हुआ था। अत: कथन 1 सही है।
- देहाती क्षेत्र की अपेक्षा शहरों में ज्यादा खुला वातावरण था। इसलिये शहरों में तरह-तरह के नए विचारों का और कला तथा साहित्य से संबंधित क्रियाकलापों का खूब विकास हुआ। जैसे-जैसे व्यापार में वृद्धि हुई, वैसे-वैसे व्यापारी वर्ग का महत्त्व बढ़ता गया। समाज और सरकार में व्यापारियों को उच्च पद प्राप्त हुए। इस प्रकार सरदारों और आम लोगों के बीच एक नए वर्ग-मध्यवर्ग का उदय हुआ। अत: कथन 2 और 3 भी सही हैं।

2. नई समाज-व्यवस्था के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. इस व्यवस्था में घरेलू व्यवस्था का स्थान कारखाना व्यवस्था ने ले लिया।
   2. नई व्यवस्था में राजा या सामंत का स्थान मालिक या पूंजीपति ने ले लिया।
   3. इस नई समाज-व्यवस्था का उदय सबसे पहले अमेरिका में हुआ।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
   (c) केवल 2 और 3 (d) केवल 1 और 3

उत्तर: (b)
व्याख्या: वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाने के कारण उत्पादन के तरीकों में बड़ी तेज़ी से परिवर्तन हुए। उसके पहले कारीगर अपने सामान्य औजारों से अपने घरों में काम करते थे और उनके परिवारों के सदस्य उनकी मदद करते थे। यह 'घरेलू व्यवस्था' बाज़ार की लगातार बढ़ती मांग की पूर्ति करने में समर्थ नहीं थी। अठारहवीं सदी में इसका स्थान 'कारखाना व्यवस्था' ने ले लिया। अत: कथन 1 सही है।
- पहले की समाज व्यवस्था में राजा या सामंत सबसे शक्तिशाली व्यक्ति होते थे, मगर नई व्यवस्था में उनका स्थान कारखाने के मालिक या पूंजीपति ने ले लिया। अत: कथन 2 भी सही है।
- कथन 3 गलत है क्योंकि इस नई समाज-व्यवस्था का उदय सर्वप्रथम इंग्लैंड में हुआ।

3. औद्योगिक क्रांति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. कारखानों में मशीनों की मदद से वस्तुओं के उत्पादन को औद्योगिक क्रांति का नाम दिया गया है।
   2. इस क्रांति की शुरुआत इंग्लैंड में 17वीं सदी के आखिरी में हुई।
   3. इस क्रांति ने केवल इंग्लैंड की उत्पादन प्रणाली को प्रभावित किया।
   4. धमन भट्ठी तथा बिजली जैसे आविष्कारों ने औद्योगिक क्रांति को अधिक प्रभावकारी बनाया।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल 1 और 4 (b) केवल 2
   (c) केवल 1 और 2 (d) केवल 1 और 3

उत्तर: (a)
व्याख्या: कथन 1 सही है क्योंकि कारखानों में मशीन की मदद से वस्तुओं के उत्पादन को 'औद्योगिक क्रांति' कहा गया।
- इस क्रांति की शुरुआत 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुई। अत: कथन 2 गलत है।
- इस क्रांति ने अन्य जगहों की उत्पादन प्रणाली को भी प्रभावित किया। अत: कथन 3 गलत है।
- आगे चलकर बिजली तथा धमन भट्ठी जैसे आविष्कारों ने और लोहे की ढलाई तथा बेलनी के नए साधनों ने औद्योगिक क्रांति को पहले से भी अधिक प्रभावकारी बना दिया। अत: कथन 4 सही है।

4. अमेरिकी क्रांति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. अंग्रेज़ी सरकार द्वारा उत्तरी अमेरिका में बसाए गए तेरह उपनिवेशों के अधिकांश लोग इटली से आए थे।
   2. अमेरिकी नेता थॉमस जेफरसन ने अपने अधिकारों का उपयोग करने के लिये अपने उपनिवेशी साथियों को प्रोत्साहित किया।
   3. 4 जुलाई, 1776 को तेरह उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने मिलकर 'स्वतंत्रता की घोषणा' की।

कक्षा XI

प्राचीन भारत (रामशरण शर्मा)

1. प्राचीन भारतीय इतिहास का महत्त्व

1. प्राचीन भारत के इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन असत्य है?
   (a) प्राचीन काल में प्राकृत भाषा देश भर की संपर्क-भाषा (लिंगुआ फ्रैंका) का काम करती थी।
   (b) प्राचीन काल के दो महाकाव्य (रामायण और महाभारत) की रचना मूलतः संस्कृत भाषा में हुई थी।
   (c) सम्राट अशोक के शिलालेख केवल प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे।
   (d) हमारे देश का नाम 'इंडिया' अरबी और फारसी भाषाओं में हिंद नाम से विदित हुआ है।

उत्तरः (c)
व्याख्याः सम्राट अशोक के शिलालेख प्राकृत भाषा के अलावा खरोष्ठी और आरामाइक लिपियों में है। पश्चिमोत्तर और अफगानिस्तान में इनकी भाषा और लिपि आरामाइक और यूनानी दोनों हैं। अतः कथन (c) असत्य है। अन्य तीनों कथन सत्य हैं।

2. चक्रवर्ती राजा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः
   1. वैसे राजा जिसके राज्य का प्रसार हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र की घाटी से लेकर सिंधु पार तक होता था।
   2. सम्राट अशोक और समुद्रगुप्त दोनों चक्रवर्ती राजा थे।

   उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर (c)
व्याख्याः उपर्युक्त दोनों कथन सत्य हैं।
- हिमालय से कन्याकुमारी तक, पूर्व में ब्रह्मपुत्र की घाटी से पश्चिम में सिंधु-पार तक अपना राज्य फैलाने वाले राजाओं को चक्रवर्ती राजा कहा जाता था। अतः कथन (1) सत्य है।
- सम्राट अशोक ने अपना साम्राज्य सुदूर दक्षिणांचल को छोड़कर सारे देश में फैलाया तथा समुद्रगुप्त की विजय-पताका गंगा की घाटी से तमिल देश के छोर तक पहुँची,इस प्रकार दोनों चक्रवर्ती राजा कहलाते थे अतः कथन (2) सत्य है।

3. आर्यों के सांस्कृतिक उपादान के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः
   1. आर्य सांस्कृतिक उपादान द्रविड़ और तमिल संस्कृति से आए हैं।
   2. प्राक् आर्य जातीय उपादान वैदिक और संस्कृतमूलक संस्कृति के अंग हैं।

   उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तरः (d)
व्याख्याः उपर्युक्त दोनों कथन असत्य हैं।
- आर्य सांस्कृतिक उपादान उत्तर के वैदिक और संस्कृतमूलक संस्कृति से आए हैं।
- प्राक् आर्य जातीय उपादान दक्षिण की द्रविड़ और तमिल संस्कृति के अंग हैं।

4. भारत में विदेशियों के आगमन का सही कालानुक्रम है?
   (a) शक → हूण → तुर्क → यूनानी → आर्य
   (b) आर्य → यूनानी → शक → हूण → तुर्क
   (c) यूनानी → आर्य → शक → हूण → तुर्क
   (d) आर्य → शक → यूनानी → तुर्क → हूण

उत्तरः (b)
व्याख्याः प्राचीन भारत अनेकानेक मानव-प्रजातियों का संगम रहा है। इनमें आर्य → यूनानी → शक → हूण → तुर्क आदि अनेक प्रजातियाँ शामिल थीं। ये सभी समुदाय और इनके सारे सांस्कृतिक वैशिष्ट्य आपस में इस तरह नीरक्षीरवत् हो गए कि आज उनमें से किसी को भी उनके मूल रूप से साफ-साफ पहचा नहीं सकते हैं।

2. प्राचीन भारतीय इतिहास के आधुनिक लेखक

1. अंग्रेजों तथा क्रिश्चियन मिशनरियों द्वारा भारतीय इतिहास तथा धर्म ग्रंथों के अध्ययन में रुचि लेने के कारणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः
   1. भारतीय लोगों के रीति-रिवाज और सामाजिक व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त करने के लिये।
   2. भारतीय लोगों का धर्म परिवर्तन करवाने के लिये।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तरः (c)
व्याख्याः उपर्युक्त दोनों कथन सत्य हैं।
- 1857 के विद्रोह के पश्चात् अंग्रेजों ने यह महसूस किया कि उन्हें भारत पर अपना शासन मजबूत करने के लिये यहाँ के लोगों के रीति-रिवाजों और सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन करना होगा।
- क्रिश्चियन मिशनरियों ने भारतीय लोगों का धर्म परिवर्तन करने के लिये उनके धर्म की दुर्बलताओं को जानना आवश्यक समझा, ताकि वे धर्म परिवर्तन करा सकें और उनके द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य को मजबूत बनाया जा सके।

मध्यकालीन भारत (सतीश चन्द्रा)

1. भारत और बाहरी दुनिया

1. फ्यूडलिज़्म या सामंतवाद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   1. इस व्यवस्था का उदय रोम साम्राज्य के विघटन के पश्चात् पश्चिमी यूरोप में हुआ।
   2. 'फ्यूडम' लैटिन शब्द है जिसका अर्थ है 'फीफ' या 'जागीर'

   कूटः
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तरः (c)
व्याख्याः उपर्युक्त दोनों कथन सत्य हैं।
- फ्यूडलिज़्म शब्द लैटिन भाषा के 'फ्यूडम' से बना है।
- सामंती व्यवस्था में सरकार में 'भूस्वामी अभिजात वर्ग' का बोलबाला रहता था ध्यान देने योग्य है कि यह ऐसा अभिजात वर्ग नहीं था जिसका द्वार दूसरों के लिये पूरी तरह बंद रहता हो।

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः
   1. आधुनिक गणित का आधार दशमलव प्रणाली है।
   2. भारत में दशमलव प्रणाली पाँचवीं सदी में विकसित हुई।

   उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तरः (c)
व्याख्याः उपर्युक्त दोनों कथन सत्य हैं।
- भारत में पाँचवी सदी में दशमलव प्रणाली का विकास हुआ। इसी काल में यह अरबों तक पहुँची। नवीं सदी में अरब गणितज्ञ अलख्वारिज्मि ने इसे अरब में लोकप्रिय बनाया। बारहवीं सदी में एक ईसाई 'अबेलार्ड' के माध्यम से यूरोप पहुँची। वहाँ ये 'अरब अंक पद्धति' के रूप में प्रसिद्ध हुई।

3. तांग साम्राज्य के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः
   1. इसके अधीन 8वीं से 9वीं सदी के बीच चीन का समाज व संस्कृति प्रगति पर थी।
   2. यह मध्य एशिया से चीनी-मिट्टी के बर्तन और संग्यशब (जेड) पत्थर से बनी चीज़ों का भारत व यूरोप में निर्यात करते थे।

   उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तरः (c)
व्याख्याः उपर्युक्त दोनों कथन सत्य हैं।
- तांग शासन के अधीन 8वीं से 9वीं सदी में चीन का समाज और वहाँ की संस्कृति प्रगति के चरमोत्कर्ष पर थे। इन्होंने मध्य एशिया में सिंकियांग के बहुत बड़े हिस्से पर, जिसमें काशगर भी शामिल था, तक प्रभुत्व स्थापित कर लिया था।
- इन शासकों ने रेशम मार्ग से जमीन के रास्ते होने वाले व्यापार में काफी बढ़ोत्तरी की। यह रेशम के साथ-साथ उत्तम कोटि के चीनी-मिट्टी के बर्तन और संग्यशब (जेड) नामक पत्थर की पच्चीकारी वाली चीज़ें पश्चिम एशिया, यूरोप और भारत को निर्यात करते थे।

4. शैलेंद्र साम्राज्य के संबंध में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?
   (a) इनका चीन के साथ होने वाले समुद्री व्यापार पर नियंत्रण था।
   (b) इनके पास शक्तिशाली नौसेना थी।
   (c) इनकी राजधानी पालेमबांग (सुमात्रा) थी।
   (d) चोलों के साथ इनके कटुतापूर्ण संबंध थे।

उत्तरः (d)
व्याख्याः शैलेंद्र शासकों के चोलों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध थे। अतः कथन (d) असत्य है और सभी कथन सत्य हैं।

5. बोरोबुदूर का मंदिर किसे समर्पित है?
   (a) शिव (b) विष्णु
   (c) बुद्ध (d) पार्वती

उत्तरः (c)
व्याख्याः शैलेंद्र शासकों ने सुमात्रा के निकट पालेमबांग में अपनी राजधानी बनाई, जो पहले से ही संस्कृत व बौद्ध अध्ययन का अनुसंधान केंद्र था। इन्होंने बोरोबुदूर में बुद्ध को समर्पित एक मंदिर बनवाया।

6. कंबोज साम्राज्य की मंदिर शैली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः
   1. इन्होंने कंबोडिया में अंकोरबाट मंदिर बनवाया।
   2. इन्होंने इसमें महाभारत और रामायण के दृश्य अंकित करवाए।

   उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तरः (c)
व्याख्याः उपर्युक्त दोनों कथन सत्य हैं।
- कंबोज शासकों ने कंबोडिया और अन्नाम तक अपना प्रभुत्व स्थापित किया था, जो 15वीं सदी तक कायम रहा। इस काल में साम्राज्य की सांस्कृतिक और आर्थिक समृद्धि चरमोत्कर्ष पर थी। इन्होंने कंबोडिया में अंकोरबाट के मंदिर का निर्माण करवाया।

भारतीय इतिहास के कुछ विषय [भाग -1]

1. ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ

1. हड़प्पा के संदर्भ में 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग पुरातत्त्वविदों ने निम्नलिखित में से किन विशेषताओं के आधार पर किया है?
   1. वस्तुओं की विशिष्ट शैली।
   2. एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र से संबद्धता।
   3. विशेष काल-खंड से संबद्ध होना।

   नीचे दिये गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिये:

   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 1 और 3
   (c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (d)
व्याख्या:
- उपर्युक्त तीनों ही विशेषताएँ पुरातत्त्वविदों द्वारा हड़प्पा के लिये 'संस्कृति' शब्द के प्रयोग का आधार हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता को 'हड़प्पा संस्कृति' भी कहा जाता है। पुरातत्त्वविद् 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग पुरावस्तुओं के ऐसे समूह के लिये करते हैं, जो एक विशिष्ट शैली के होते हैं और सामान्यतया एक साथ एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र तथा काल-खंड से संबद्ध पाए जाते हैं।
- हड़प्पा सभ्यता के संदर्भ में विशिष्ट शैली की पुरावस्तुओं में मुहरें, मनके, बाट, पत्थर के फलक और पकी हुई ईंटें सम्मिलित की जाती हैं।

2. हड़प्पा के काल निर्धारण के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सी तिथि पर सामान्यत: पुरातत्त्वविद् सहमत हैं?

   (a) 4000 से 1800 ईसा पूर्व के मध्य।
   (b) 2600 से 1900 ईसा पूर्व के मध्य।
   (c) 3600 से 2000 ईसा पूर्व के मध्य।
   (d) 4600 से 3600 ईसा पूर्व के मध्य।

उत्तर: (b)
व्याख्या:
- हड़प्पा काल का निर्धारण पुरातत्त्वविदों द्वारा 2600 से 1900 ईसा पूर्व के मध्य किया गया है।
- उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में इस सभ्यता से पहले और बाद में भी संस्कृतियाँ अस्तित्व में थीं, जिन्हें क्रमश: आरंभिक तथा परवर्ती हड़प्पा संस्कृति कहा जाता है। इन संस्कृतियों से हड़प्पा सभ्यता को अलग करने के लिये कभी-कभी इसे विकसित हड़प्पा संस्कृति भी कहा जाता है।

3. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

सूची-I (तिथि संबंधित संकेत)	सूची-II (अर्थ)
A. बी.सी. (B.C.)	1. बिफोर कॉमन एरा
B. ए.डी. (A.D.)	2. कॉमन एरा
C. सी.ई. (C.E.)	3. एनो डॉमिनी
D. बी.सी.ई. (B.C.E.)	4. बिफोर क्राइस्ट

कूट:

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	4	3	2	1
(c)	4	3	1	2
(d)	4	1	2	3

उत्तर: (b)
व्याख्या:
- बी.सी. (B.C.) – बिफोर क्राइस्ट यानी ईसा पूर्व।
- ए.डी. (A.D.) – एनो डॉमिनी, इसे हिंदी में ई. लिखा जाता है। इसका तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के वर्ष से है।
- उल्लेखनीय है कि आजकल ए.डी. (A.D.) के स्थान पर सी.ई. (C.E.) तथा बी.सी. (B.C.) के स्थान पर बी.सी.ई. (B.C.E.) का प्रयोग किया जाता है। इसमें सी.ई. का प्रयोग 'कॉमन एरा' तथा बी.सी.ई. का प्रयोग 'बिफोर कॉमन एरा' के लिये किया जाता है। विश्व में अब इन शब्दों का प्रयोग सामान्य हो गया है।
- कभी-कभी अंग्रेजी में बी.पी. (B.P.) अक्षरों का प्रयोग किया जाता है, जिसका तात्पर्य है 'बिफोर प्रजेंट'।

4. हड़प्पा संस्कृति के विस्तार के संदर्भ में 'चोलिस्तान' शब्द का प्रयोग किस क्षेत्र के लिये किया गया है?

   (a) थार रेगिस्तान तथा गुजरात के कुछ क्षेत्र।
   (b) थार रेगिस्तान से लगा हुआ पाकिस्तान का रेगिस्तानी क्षेत्र।
   (c) जम्मू-कश्मीर के हड़प्पाई स्थल।
   (d) सिंध क्षेत्र से प्राप्त हड़प्पाई स्थल।

उत्तर: (b)
व्याख्या: हड़प्पा संस्कृति में 'चोलिस्तान' शब्द का प्रयोग थार रेगिस्तान से लगे हुए पाकिस्तान के रेगिस्तानी क्षेत्र के लिये किया गया है। इसकी गिनती आरंभिक तथा विकसित हड़प्पा संस्कृतियों में की जाती है। यहाँ से 239 बस्तियाँ प्राप्त हुईं।

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. हड़प्पा संस्कृति में बाजरे के दाने गुजरात के हड़प्पाई स्थलों से प्राप्त हुए हैं।
   2. हड़प्पा निवासी भेड़, बकरी, भैंस तथा सूअर पालते थे।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तरः (c)

व्याख्याः

- स्तूप बनाने की परंपरा बुद्धकाल से पूर्व भी मौजूद थी, लेकिन कालांतर में यह बौद्ध धर्म से जुड़ गई। अतः कथन 1 गलत है।
- उल्लेखनीय है कि, चूँकि इसमें ऐसे अवशेष रहते थे जिन्हें पवित्र समझा जाता था, इसलिये समूचे स्तूप को ही बुद्ध तथा बौद्ध धर्म के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठा मिली।
- स्तूपों की वेदिकाओं और स्तंभों पर मिले अभिलेखों से इन्हें बनाने और सजाने के लिये दिये गए दान का पता चलता है। कुछ दान राजाओं द्वारा दिये गए थे (जैसे सातवाहन वंश के राजा), तो कुछ दान शिल्पकारों और व्यापरिक श्रेणियों द्वारा दिये गए। स्तूप निर्माण में भिक्खुओं और भिक्खुनियों ने भी दान दिया। अतः कथन 2 सही है।
- स्तूप की संरचना मिट्टी के टीले जैसी होती है, जिसे बाद में अंड कहा गया। अंड के ऊपर एक हर्मिका होती थी। यह छज्जे जैसा ढाँचा देवताओं के घर का प्रतीक था। हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था, जिसे यष्टि कहते थे, जिस पर एक छतरी लगी रहती थी। अतः कथन 3 सही है।

13. निम्नलिखित कथनों में कौन-सा सही नहीं है?
    (a) साँची और भरहुत के प्रारंभिक स्तूप बिना अलंकरण के हैं।
    (b) अमरावती तथा पेशावर में शाहजी की ढेरी में स्तूपों में ताख तथा मूर्तियों के उत्कीर्णन के उदाहरण मिलते हैं।
    (c) शालभंजिका की मूर्ति का संबंध अमरावती से है।
    (d) बौद्ध धर्म से जुड़े पुरातन परंपरा के अनुयायी स्वयं को थेरवादी कहते थे।

उत्तरः (c)

व्याख्याः

- शालभंजिका की मूर्ति का संबंध साँची के स्तूप से है। लोक परंपरा में यह माना जाता था कि इस स्त्री द्वारा छुए जाने से वृक्षों में फूल खिल उठते थे और फल लगने लगते थे। अतः कथन (c) गलत है। अन्य सभी कथन सही हैं।
- उल्लेखनीय है कि महायान के अनुयायी दूसरी बौद्ध परंपराओं के समर्थकों को हीनयान का अनुयायी कहते थे। लेकिन, पुरातन परंपरा के अनुयायी खुद को थेरवादी कहते थे। अर्थात् वे लोग जो पुराने, प्रतिष्ठित शिक्षकों (जिन्हें थेर कहते थे) के बतलाए रास्ते पर चले, थेरवादी कहलाए।

14. निम्नलिखित युग्मों को सुमेलित कीजियेः

(मंदिर)		(स्थान)
1. महाबलिपुरम्	:	आंध्र प्रदेश
2. देवगढ़	:	उत्तर प्रदेश
3. कैलाशनाथ मंदिर	:	तमिलनाडु

उपर्युक्त युग्मों में से कौन-सा/से सुमेलित है/हैं?
(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तरः (b)

व्याख्याः युग्मों का सुमेलन निम्न प्रकार है:

महाबलिपुरम्	:	तमिलनाडु
देवगढ़	:	उत्तर प्रदेश
कैलाशनाथ मंदिर	:	एलोरा (महाराष्ट्र)

NCERT श्रृंखला की पुस्तकें

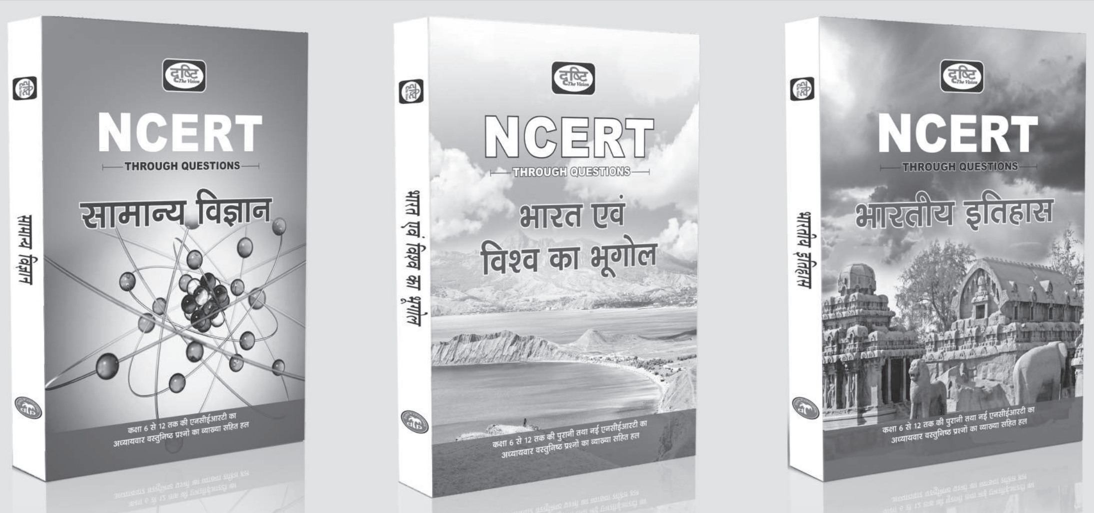

कक्षा 6 से 12 तक की पुरानी तथा नई एनसीईआरटी की पुस्तकों का अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का व्याख्या सहित हल

भारतीय इतिहास के कुछ विषय [भाग -2]

5: यात्रियों के नज़रिये

1. विजयनगर के विषय में विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने वाले अब्दुर रज़्ज़ाक समरकंदी का संबंध किस देश से था?

(a) ईरान (b) इराक
(c) हेरात (d) इटली

उत्तरः (c)
व्याख्याः पंद्रहवीं शताब्दी में विजयनगर का विवरण प्रस्तुत करने वाले राजनयिक अब्दुर रज्जाक समरकंदी का संबंध हेरात (अफगानिस्तान) से था।

2. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजियेः

(यात्री)		(भारत की यात्रा का समय)
1. अल-बरूनी	:	बारहवीं शताब्दी
2. इब्नबतूता	:	तेरहवीं शताब्दी
3. फ्रांस्वा बर्नियर	:	ग्यारहवीं शताब्दी

उपर्युक्त युग्मों में कौन-सा/से युग्म सुमेलित नहीं है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तरः (d)
व्याख्याः उपर्युक्त युग्मों में कोई भी युग्म सुमेलित नहीं है। युग्मों का सुमेलन निम्नलिखित प्रकार हैः

अल-बरूनी	:	ग्यारहवीं शताब्दी (उज्बेकिस्तान)
इब्नबतूता	:	चौदहवीं शताब्दी (मोरक्को)
फ्रांस्वा बर्नियर	:	सत्रहवीं शताब्दी (फ्राँस)

3. अल-बरूनी द्वारा रचित 'किताब-उल-हिंद' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः

1. यह अरबी भाषा में लिखी गई है।
2. सामान्यतः इसके प्रत्येक अध्याय की शुरुआत एक प्रश्न से की गई है।
3. इसमें अल-बरूनी ने खगोल तथा मापतंत्र विज्ञान संबंधी विस्तृत जानकारी भी प्रदान की है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तरः (d)
व्याख्याः उपर्युक्त सभी कथन सही हैं।
- किताब-उल-हिंद की रचना अरबी भाषा में की गई थी जिसमें 80 अध्याय हैं।
- सामान्यतः अलबरूनी ने प्रत्येक अध्याय में एक विशिष्ट शैली का प्रयोग किया, जिसमें आरंभ में एक प्रश्न होता था, फिर संस्कृतवादी परंपराओं पर आधारित वर्णन लिखा तथा अंत में अन्य संस्कृतियों के साथ एक तुलना।
- अल-बरूनी संस्कृत, पाली तथा प्राकृत ग्रंथों के अरबी भाषा में अनुवादों तथा रूपांतरणों से परिचित था। इनमें दंतकथाओं से लेकर खगोल विज्ञान और चिकित्सा संबंधी कृतियाँ भी शामिल थीं। इन ग्रंथों की लेखन शैली के विषय में उसका दृष्टिकोण आलोचनात्मक था। उसका यह ग्रंथ धर्म और दर्शन, त्योहारों, खगोल-विज्ञान, रीति-रिवाज तथा प्रथाओं, सामाजिक-जीवन, भार-तौल तथा मापन विधियों, मूर्तिकला, कानून, मापतंत्र विज्ञान आदि विषयों के आधार पर अस्सी अध्यायों में विभाजित है।

4. लगभग छठी-पाँचवीं शताब्दी ई.पू. अस्तित्त्व में आए 'हिंदू' शब्द के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजियेः

1. यह फारसी भाषा का शब्द है।
2. इसका प्रयोग सिंधु नदी के पश्चिम क्षेत्र के लिये होता था।
3. यह सामाजिक तथा धार्मिक पहचान के रूप में जाना जाता था।

उपर्युक्त कथनों में कौन-सा/से सही नहीं है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तरः (c)
व्याख्याः
- 'हिंदू' शब्द लगभग छठी-पाँचवीं शताब्दी ई.पू. में प्रयुक्त होने वाले एक प्राचीन फारसी शब्द, जिसका प्रयोग सिंधु नदी के पूर्व के क्षेत्र के लिये होता था, से निकला है। अतः कथन 1 सही तथा कथन 2 गलत है।
- अरबी लोगों ने इस फारसी शब्द को जारी रखा तथा इस क्षेत्र को 'अल-हिंद' एवं यहाँ के निवासियों को 'हिंदी' कहा।
- कालांतर में तुर्कों ने सिंधु से पूर्व में रहने वाले लोगों को 'हिंदू', उनके निवास क्षेत्र को 'हिंदुस्तान' तथा उनकी भाषा को 'हिंदवी' नाम दिया। इनमें से कोई भी शब्द लोगों की धार्मिक या सामाजिक पहचान का द्योतक नहीं था। अतः कथन 3 गलत है।

5. 'रिहला' निम्नलिखित में से किस यात्री का यात्रा-वृत्तांत है?

(a) अब्दुर रज्जाक (b) इब्नबतूता
(c) मनूची (d) टेवर्नियर

भारतीय इतिहास के कुछ विषय [भाग -3]

10. उपनिवेशवाद और देहात

1. अंग्रेजों द्वारा इस्तमरारी बंदोबस्त लागू करने के कारणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. बंगाल की ग्रामीण अर्थव्यवस्था संकट के दौर से गुजर रही थी तथा खेती की पैदावार निरंतर घट रही थी।
   2. इस व्यवस्था द्वारा राजस्व मांग की दरों को स्थायी करना था।
   3. अंग्रेजों का मानना था कि इस व्यवस्था से एक ऐसा वर्ग उत्पन्न होगा जिसके पास कृषि में निवेश करने के लिये पूंजी और उद्यम दोनों होंगे।

   उपर्युक्त कारणों में कौन-से इस्तमरारी बंदोबस्त लागू करने के लिये जिम्मेदार थे?

   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तरः (d)
व्याख्याः अंग्रेजों द्वारा इस्तमरारी बंदोबस्त लागू करने के लिये उपर्युक्त सभी कारण जिम्मेदार थे।

ब्रिटिश अधिकारी यह आशा करते थे कि इस्तमरारी बंदोबस्त लागू किये जाने से वे सभी समस्याएँ हल हो जाएंगी जो बंगाल विजय के समय उत्पन्न हो रही थीं। 1770 के दशक तक आते-आते बंगाल की ग्रामीण अर्थव्यवस्था संकट के दौर से गुजरने लगी। बार-बार अकाल पड़े तथा खेती की पैदावार घटती गई। अंग्रेजों ने कृषि में निवेश को प्रोत्साहन देने के लिये इस्तमरारी बंदोबस्त का चुनाव किया। उनके अनुसार यदि सरकार राजस्व की मांग स्थायी रूप से निर्धारित कर दे तो कंपनी को नियमित राजस्व मिलेगा और उद्यमकर्ता भी अपने पूंजी निवेश से लाभ कमाने की उम्मीद रख सकेंगे, क्योंकि लाभ में कंपनी की भागीदारी नहीं थी। अधिकारियों को यह भी आशा थी कि इस व्यवस्था से छोटे किसानों तथा धनी भूस्वामियों का एक ऐसा वर्ग उत्पन्न हो जाएगा जिसके पास कृषि में सुधार करने के लिये पूंजी और उद्यम दोनों होंगे।

2. 'सूर्यास्त नियम' का संबंध निम्नलिखित में से किस/किन भूमि व्यवस्था/व्यवस्थाओं से था?
   1. इस्तमरारी 2. महालवाड़ी
   3. रैयतवाड़ी 4. इस्तमरारी तथा महालवाड़ी

   नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

   (a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3 (d) केवल 4

उत्तरः (a)
व्याख्याः 'सूर्यास्त नियम' का संबंध इस्तमरारी बंदोबस्त से था। इस नियम के अनुसार यदि निश्चित तारीख को सूर्यास्त होने तक जमींदार राजस्व का भुगतान नहीं करता था तो उसकी जमींदारी नीलाम कर दी जाती थी।

3. सूपा विद्रोह की शुरुआत कहाँ से हुई?

   (a) पटना (b) गुजरात
   (c) पूना (d) अहमदाबाद

उत्तरः (c)
व्याख्याः
- सूपा आंदोलन की शुरुआत पूना (आधुनिक पुणे) जिले से हुई। सूपा एक विपणन केंद्र (मंडी) था, जहाँ अनेक व्यापारी और साहूकार रहते थे। 12 मई, 1875 को वहाँ आसपास के ग्रामीण इलाकों की रैयत (किसान) इकट्ठा हो गई, उन्होंने साहूकारों के बही-खाते जला दिये, अनाज की दुकानें लूट लीं और उनके घरों को भी आग लगा दी।
- पूना से यह विद्रोह अहमदनगर में फैल गया, तीस से अधिक गाँव इससे प्रभावित हुए। अंग्रेजों ने इस विद्रोह को दबाने के लिये विद्रोही किसानों के गाँवों में पुलिस थाने स्थापित किये।

4. मैनचेस्टर कॉटन कंपनी की स्थापना कब की गई?

   (a) 1851 (b) 1858
   (c) 1862 (d) 1859

उत्तरः (d)
व्याख्याः 1857 में, ब्रिटेन में कपास आपूर्ति संघ की स्थापना हुई और 1859 में मेनचेस्टर कॉटन कंपनी बनाई गई। इसका उद्देश्य 'दुनिया के हर भाग में कपास के उत्पादन को प्रोत्साहित करना था जिससे उनकी कंपनी का विकास हो सके' उल्लेखनीय है कि भारत को एक ऐसे देश के रूप में देखा गया जो अमेरिका से कपास की आपूर्ति बंद हो जाने की दशा में लंकाशायर को कपास की आपूर्ति कर सकता था।

5. 1859 में अंग्रेजों द्वारा पारित परिसीमन कानून के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. ऋणदाता और रैयत के बीच हस्ताक्षरित ऋणपत्र को केवल तीन वर्षों की मान्यता प्रदान की गयी।
   2. इसका उद्देश्य बहुत समय तक ब्याज को संचित होने से रोकना था।

   उपर्युक्त कथनों में कौन सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तरः (c)
व्याख्याः उपर्युक्त दोनों कथन सही हैं।
- रैयतों द्वारा ऋणदाताओं की धोखाधड़ी की शिकायतों के कारण 1859 में अंग्रेजों द्वारा परिसीमन कानून पारित किया गया जिसमें कहा गया कि ऋणदाता और रैयत के बीच हस्ताक्षरित ऋणपत्र केवल तीन वर्षों के लिये मान्य होगा।
- इसका उद्देश्य बहुत समय तक ब्याज को संचित होने से रोकना था, किंतु ऋणदाताओं ने इस कानून को अपने पक्ष में कर लिया और रैयत से हर तीसरे वर्ष एक नया बंधपत्र भरवाने लगे। जब ऋण चुकाए जाते तो ऋणदाता रैयत को उसकी रसीद देने से मना कर देते थे, बंधपत्रों में जाली आँकड़े भर लेते थे, किसानों की फसलों को कम कीमतों पर ले लेते थे और आखिरकार किसानों की धन-संपत्ति पर ही कब्जा कर लेते थे।

आधुनिक भारत (विपिन चन्द्रा)

1. अठारहवीं सदी का भारत

1. औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल शासकों के गद्दी पर बैठने का सही कालानुक्रम कौन-सा है?
   (a) बहादुरशाह प्रथम → जहाँदारशाह → फर्रुखसियर → शाह आलम द्वितीय
   (b) जहाँदारशाह → फर्रुखसियर → शाह आलम द्वितीय → बहादुरशाह प्रथम
   (c) फर्रुखसियर → शाह आलम द्वितीय → बहादुरशाह प्रथम → जहाँदारशाह
   (d) शाह आलम द्वितीय → बहादुरशाह प्रथम → जहाँदारशाह → फर्रुखसियर

उत्तरः (a)
व्याख्याः औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके तीनों बेटों के बीच गद्दी के लिये संघर्ष हुआ, जिसमें 65 वर्षीय बहादुरशाह विजयी रहा। उसने 1707 से 1712 की अवधि तक शासन किया।
- बहादुरशाह की मृत्यु के बाद उसके बेटे जहाँदारशाह ने तत्कालीन शक्तिशाली सामंत जुल्फिकार खाँ की सहायता से गद्दी प्राप्त की थी। यह नितांत अयोग्य शासक था। लोग उसे 'लम्पट मूर्ख' कहते थे।
- जहाँदारशाह को परास्त करके सैयद बंधुओं (अब्दुल्ला खाँ और हुसैन अली खाँ बाराह) की सहायता से उसका भतीजा फर्रुखसियर (1713 में) गद्दी पर बैठा। सैयद बंधुओं ने फर्रुखसियर की सत्ता पाने में सहायता की थी और बाद में उन्होंने ही उसकी हत्या कर दी। इसके बाद उन्होंने बारी-बारी से दो युवा शहजादों को गद्दी पर बैठाया जो बीमारी से मर गए। इसके बाद 18 वर्षीय मुहम्मदशाह को गद्दी पर बैठा दिया। भारतीय इतिहास में सैयद बंधुओं को 'राजा बनाने वाले' के नाम से जाना जाता है।
- शाह आलम द्वितीय 1759 में गद्दी पर बैठा था।

2. नादिरशाह का आक्रमण निम्नलिखित में से किस मुगल बादशाह के समय हुआ था?
   (a) बहादुरशाह प्रथम (b) फर्रुखसियर
   (c) मुहम्मदशाह (d) औरंगजेब

उत्तरः (c)
व्याख्याः नादिरशाह का आक्रमण (1738-39) मुहम्मदशाह के समय हुआ था। मुहम्मदशाह प्रशासन के प्रति उदासीन तथा मदिरा और सुंदरी के प्रति अत्यधिक रुचि रखता था, जिस कारण लोग उसे 'रंगीला' कहा करते थे। मयूर सिंहासन पर बैठने वाला यह अंतिम शासक भी था।

3. मुगल शासक जहाँदारशाह के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. जहाँदारशाह ने जुल्फिकार खाँ की सहायता से गद्दी प्राप्त की थी।
   2. उसके समय में जजिया समाप्त किया गया।
   3. इसी के शासनकाल में आमेर के शासक जयसिंह को मिर्जा राजा सवाई की पदवी दी गई।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 1 और 3
   (c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तरः (d)
व्याख्याः उपर्युक्त तीनों कथन सही हैं।
- जहाँदारशाह ने तत्कालीन सबसे शक्तिशाली शासक जुल्फिकार खाँ की सहायता से गद्दी प्राप्त की थी।
- जहाँदारशाह के समय जुल्फिकार खाँ वजीर बना और साम्राज्य को बचाने के लिये अनेक कदम उठाए। इसी क्रम में घृणित जजिया को समाप्त किया गया, आमेर के जयसिंह को मिर्जा राजा सवाई की पदवी दी गई और उन्हें मालवा का सूबेदार बना दिया गया।

4. मुगल काल में 'इजारेदार' निम्नलिखित में से किससे संबंधित थे?
   (a) लगान वसूलने वाला ठेकेदार
   (b) राजस्व तय करने वाले अधिकारी
   (c) ऋण का लेखा-जोखा रखने वाले अधिकारी
   (d) भूमि का सीमांकन करने वाले अधिकारी

उत्तरः (a)
व्याख्याः इजारेदार उन्हें कहते थे जिससे शासक द्वारा लगान वसूलने का करार किया जाता था। इस व्यवस्था को इजारेदारी कहते थे। इसमें निश्चित दर पर भू-राजस्व वसूल करने के बदले शासक इजारेदारों (लगान के ठेकदारों) और बिचौलियों के साथ यह करार करते थे कि वे शासक को एक निश्चित मुद्रा राशि लगान के रूप में दें। मगर वे किसानों से जितना लगान वसूल कर सकें उतना करने के लिये उन्हें आज़ाद छोड़ दिया जाता था। इससे किसानों का उत्पीड़न बढ़ा।
- हालाँकि मुगलों द्वारा इस व्यवस्था को नापसंद किया गया फिर भी जहाँदार शाह के काल में इसे बढ़ावा दिया गया।

5. नादिरशाह के आक्रमण के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
   (a) नादिरशाह भारत के प्रति यहाँ के अपार धन के कारण आकर्षित हुआ था।
   (b) मुगल फौजों से उसका मुकाबला फरवरी 1739 में करनाल में हुआ।
   (c) भारत में लूट से प्राप्त धन के कारण उसने अपने राज्य (ईरान) में तीन सालों तक कोई कर नहीं लगाया।
   (d) उसने शाहजहाँ के रत्नजड़ित मयूर सिंहासन (तख्ते-ताऊस) को नष्ट कर दिया और प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा अपने साथ ले गया।

Think IAS — दृष्टि The Vision — Think Drishti

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आप घर बैठे 'दृष्टि' द्वारा तैयार परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री मंगवा सकते हैं। यह पाठ्य-सामग्री विशेष रूप से ऐसे अभ्यर्थियों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है जो दिल्ली आकर कक्षाएँ करने में असमर्थ हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सिविल सेवा और राज्य सेवा (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ पी.सी.एस.) परीक्षाओं की पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। यह पाठ्य-सामग्री प्रत्येक परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप है और इसे विभिन्न समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं समितियों की रिपोर्टों के माध्यम से अद्यतन (up-to-date) किया गया है।

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (UPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(33 + 10 बुकलेट्स) (₹15,500/-)

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(33 बुकलेट्स) (₹14,000/-)

मध्य प्रदेश पी.सी.एस. (MPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 बुकलेट्स) (₹11,000/-)

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 बुकलेट्स) (₹10,000/-)

उत्तराखंड पी.सी.एस. (UKPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 बुकलेट्स) (₹11,000/-)

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 बुकलेट्स) (₹10,000/-)

छत्तीसगढ़ पी.सी.एस. (CGPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(35 + 6 बुकलेट्स) (₹15,500/-)

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(35 बुकलेट्स) (₹14,000/-)

राजस्थान पी.सी.एस. (RAS/RTS) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(34 बुकलेट्स) ₹10,500/-

बिहार पी.सी.एस. (BPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(25 बुकलेट्स) ₹10,000/-

For UPSC CSE (in English Medium)

Self Learning Modules

Students may opt for following modules

Prelims (17 GS + 3 CSAT Booklets) ₹10000/-
Mains (18 GS Booklets) ₹11000/-
Prelims + Mains (33 GS + 3 CSAT Booklets) ₹15000/-

Offer: Free 6 months subscription of Drishti Current Affairs Today magazine with every module

For UPPCS Mains (in English Medium)

Self Learning Modules

19 GS + 1 Essay +
1 Compulsory Hindi Booklets
₹11000/-

Offer: Free 6 months subscription of Drishti Current Affairs Today magazine for comprehensive coverage of current affairs

UPSC सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

सामान्य अध्ययन
(प्रारंभिक परीक्षा)
(19 बुकलेट्स) ₹10,000/-

सामान्य अध्ययन
(मुख्य परीक्षा)
(26 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रारंभिक परीक्षा)
(27 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(31 बुकलेट्स) ₹15,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(39 बुकलेट्स) ₹17,500/-

इतिहास
(वैकल्पिक विषय)
(12 बुकलेट्स) ₹7,000/-

दर्शनशास्त्र
(वैकल्पिक विषय)
(4 बुकलेट्स) ₹5,000/-

हिन्दी साहित्य
(वैकल्पिक विषय)
(13 बुकलेट्स) ₹7,000/-

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें : 8448485520, 87501-87501, 011-47532596

दृष्टि पब्लिकेशन्स की प्रमुख पुस्तकें

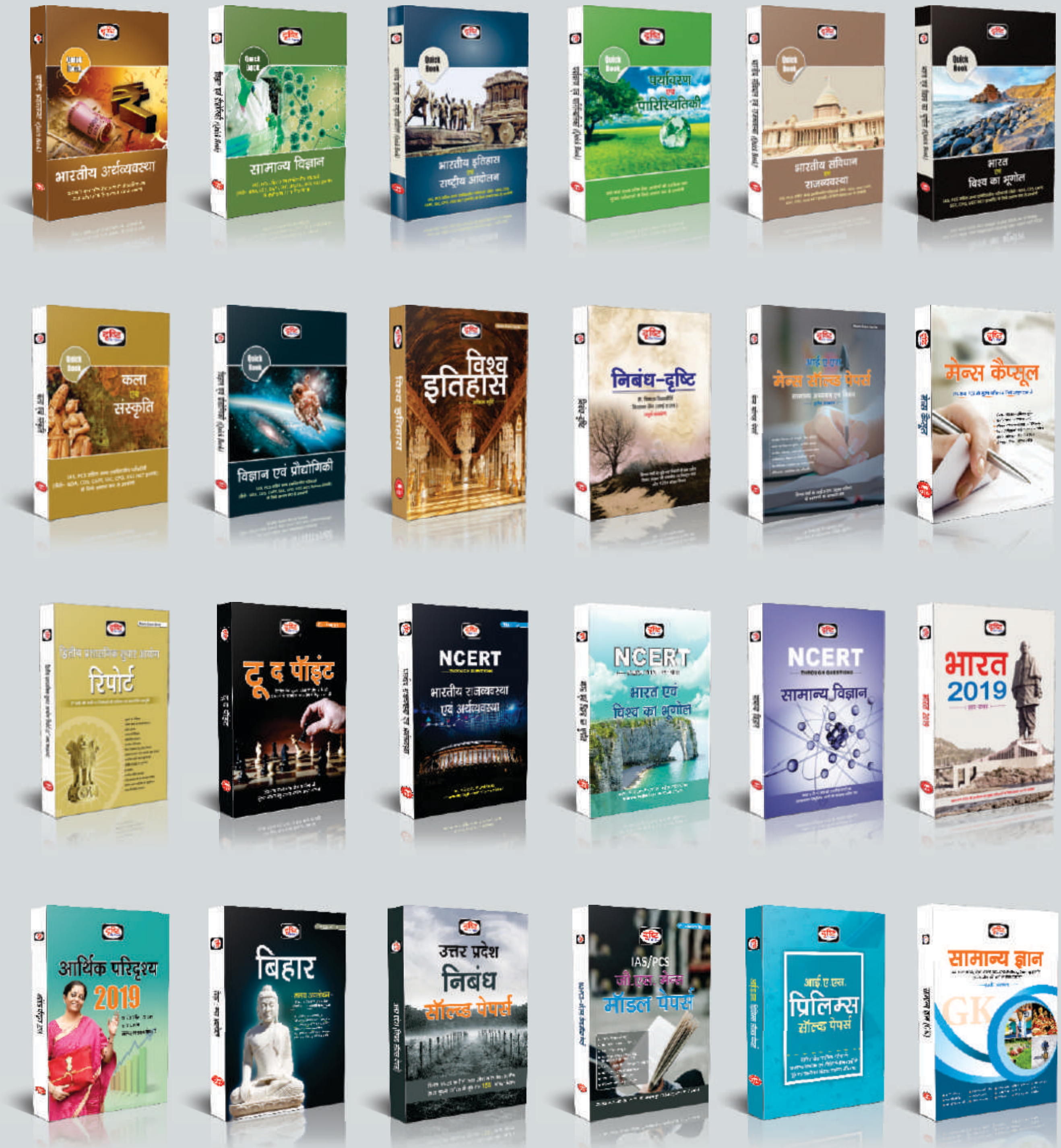

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-9
Ph.: 011-47532596, 87501 87501
Website: www.drishtipublications.com, www.drishtiias.com
E-mail: booksteam@groupdrishti.com

ISBN 978-81-937195-0-3

मूल्य : ₹ 300